विरह

प्रिया देवांगन

विह्वल व्यथित दृष्टि ये मेरी,
देखे पथ को निहार,
बार बार ध्वनि सुन वाहन की,
जब दिखती परछाई,
हृदय कहे करके स्पंदन तब ,
तुम ठहरो!मैं आई,
निर्जन पथ ये देख नयन भी,
आकुल फिर एक बार।।

छिपा भावनाओं को कितनी,
मौन सदा ही रहती,
बिना नीर के मीन बनी मैं,
आतप हर क्षण सहती,
अंग-अंग में प्रलय समेटे,
विछिन्न सकल श्रृंगार।।

मिलने को व्याकुल सदैव ही ,
देखूं प्रतिपल सपना,
बिना तुम्हारे है क्या कोई,
यहां जगत में अपना,

Scanned with OKEN Scanner

समक्ष मेरे आ जाओ तो,

आंसू दें पथ पखार।।

अब तुमको आना ही होगा,

विरह वेदना न सहूं,

मिली देह ये क्षणभंगुर है,

अगले पल मैं न रहूं,

मन भर देखूँ तुम्हें प्रिये फिर,

कर दूँ सर्वस्व वार।।

Scanned with OKEN Scanner